बचपन और बाल विकास

F2

Written by- Chhoti Kumari

Unit - 1: बचपन व बाल विकास की समझ

- बच्चे तथा बचपन : मनो - सामाजिक अवधारणा

बचपन की अवधारणा को समझने का प्रमुख स्रोत मनोविज्ञान रहा है। इसको प्रभावित करने वाला अन्य महत्त्वपूर्ण स्रोत सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं नीतिगत पक्ष है। बचपन की अवधारणा में बच्चों की छवि के लिए स्पष्ट है कि बच्चा हर चीज को स्पर्श करना, उलटना पलटना, दुनिया को समझना चाहता है, उसके बारे में बोलना चाहता है, सुनना चाहता है हर बात को विस्तृत करना चाहता है, कल्पनाएँ करना चाहता है। उनके व्यवहार के कारण उनकी विशेष पहचान होती है।

बच्चों की प्रकृति कई प्रकार की होती है। जैसे कुछ बच्चे आज्ञाकारी, जिज्ञासु, भोले - भाले, चतुर और चंचल, परिपक्वता लिए हुए, नटखट, गुमसुम, बातुनी, मिलनसार, क्रोधी, हँसमुख और, चुनौतीपूर्ण बच्चे (परिस्थितिवश) चालाक, जिद्दी, कल्पनाशील, गम्भीर, साहसी, डरपोक, नकलची, मूडी, साहसी, डरपोक, तार्किक और मनमौजी आदि हो सकते हैं।

- बचपन को प्रभावित करने वाले मनोसमाजिक कारक

सभी बच्चों का बचपन एकसमान नहीं होता है। सभी समाज के अलग - अलग समुदायों में बचपन की अवधारणा एवं बच्चों की छवी अलग रही है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवनकाल में बचपन सबसे महत्त्वपूर्ण समय होता है।

Scanned with CamScanner

बचपन की कई बाते बच्चे के भावी जीवन पर बहुत प्रभाव डालता है। बचपन को प्रभावित करनेवाले प्रमुख कारक –

1. माता – पिता
2. शिक्षक
3. समकक्षी समूह के बच्चे
4. जनसंचार
5. स्वास्थ्य
6. लिंग
7. पोषण
8. पारिवारिक, समाजिक एवं आर्थिक स्थिति
9. वातावरण

• बाल विकास : अवधारणा, विकास के विविध आयाम, प्रभावित करनेवाले कारक

बाल विकास शब्द उन परिवर्तनों से सम्बंधित है जो मनुष्य में जन्म से लेकर मृत्यु तक होते है परन्तु यह शब्द सभी परिवर्तनों पर लागू नहीं होता है। यह केवल उन परिवर्तनों की ओर इंगित करता है जो व्यवस्थित तरीकों से दिखाई देते है और पर्याप्त समयावधि तक रहते है। यह परिवर्तन जीवन के एक निश्चित समय में होते है। और जीवन का एक अंग बन जाते है।

बाल विकास में उन परिवर्तनों का अध्ययन किया जाता है जो जीवन के प्रथम दो दशको के दौरान होता है। इसमें मुख्यत: बच्चों के रूप, व्यवहार रुचिओं और लक्ष्यों में होने वाले उन विशिष्ट

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

परिवर्तनों की खोज पर बल दिया जाता है जो एक विकासात्मक अवस्था से दूसरी विकासात्मक अवस्था में प्रवेश करते समय होते हैं।
विकास शब्द का अर्थ है — "व्यवस्थित और संगतिपूर्ण तरीके से परिवर्तनों का एक प्रगतिशील श्रृंखला में होना है।" बाल विकास में मुख्य रूप से बच्चों के व्यवहार और उन व्यवहारों में समय एवं परिपक्वता के कारण होने वाले परिवर्तनों को समझने का प्रयत्न किया जाता है। बाल विकास के अध्ययन से बच्चों की स्वाभाविक क्षमताओं में विश्वास बनता है। इससे शिक्षण को अधिक दृढ़ आधार मिलता है।

बालविकास के विविध आयाम :— मनोवैज्ञानिकों ने विकास के दृष्टिकोण से गर्भकाल गर्भधारण से लेकर पूरे जीवन काल को निम्नलिखित 10 भागों में बाँटा है —

1. प्रसवपूर्व अवस्था — गर्भधारण से जीवन जन्म तक
2. शैशवावस्था — जन्म से 2 वर्ष
3. पूर्व बाल्यावस्था — 2 से 5-6 वर्ष
4. उत्तर बाल्यावस्था — 6 से 12 वर्ष
5. तरुणावस्था — 12 से 14 वर्ष
6. प्रारंभिक किशोरावस्था — 13 - 17 वर्ष
7. परवर्ती किशोरावस्था — 17 - 20 वर्ष
8. प्रारंभिक वयस्कता — 21 - 40 वर्ष
9. मध्यावस्था — 40 - 60 वर्ष
10. वृद्धावस्था — 60 वर्ष से मृत्यु तक

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

विकास की अवस्थाओं के संबंध में मनोवैज्ञानिकों में परस्पर मतभेद है। अधिकतर मनोवैज्ञानिक सहमत होकर चार अवस्थाओं के अन्तर्गत करते हैं —
शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था तथा वयस्कावस्था।

1) शैशवावस्था (Infancy) - जन्म से 2 वर्ष तक
→ तीव्र विकास की अवस्था
→ बड़ो पर निर्भरता की अवस्था
→ गतिविधियों के प्रारंभ होने की अवस्था जैसे - बोलने की क्षमता, शारीरिक क्रियाओं में तालमेल बिठाने की क्षमता, इन्द्रियों द्वारा अनुभव करने की क्षमता आदि का विकास होना।

2) पूर्व बाल्यावस्था (Early Childhood) 2 वर्ष से 6 वर्ष
→ भाषायी विकास का तीव्र गति से होना
→ कल्पना शक्ति का विकास होना
→ अकेले खेलना पसंद करना

3) उत्तर बाल्यावस्था (Later Childhood) 6-12 वर्ष तक
→ विचार शक्ति का विकास होना
→ समाजिकता का विकास होना जैसे - मित्र बनाना, समुह में खेलना।
→ नैतिक विकास जैसे अनुशासन एवं नियमों का महत्व समझना एवं उनका पालन करना
→ जिम्मेदारी उठाने की तत्परता में विकास होना।
→ पेशीय कौशल का विकास होना।

4) किशोरावस्था या वयस्कावस्था (Adolescence) 13-18 वर्ष
→ शारीरिक विकास मे तीव्रता आना

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

→ यौन परिपक्वता
→ अमूर्त चिन्तन
→ तीव्र संवेगात्मक परिवर्तन
→ स्वतंत्रता एवं विद्रोह की भावना
→ भूमिकाओं एवं दायित्वों का निर्वाहन

बाल विकास को प्रभावित करने वाले कारक –

1) जन्म एवं जन्म के पूर्व की परिस्थियाँ :– जन्म से पूर्व की परिस्थितियाँ जैसे माँ का शारीरिक स्वास्थ्य पौष्टिक भोजन इत्यादि गर्भ में पल रहे बच्चे के तात्कालिक एवं बाद के वृद्धि एवं विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते है।

2) वंशानुक्रम :– बच्चे अपने माता-पिता एवं अन्य पूर्वजों के कई गुणो के लिए होते है जैसे :– रंग-रूप, आकृति, मानसिक योग्यताएँ इत्यादि। ये जन्मजात गुण एक संभावना के रूप में होते है और परिस्थितियों के अनुसार अधिक या कम विकसित होते है।

3) लिंग :– बच्चे का लिंग उसके जन्म से लेकर आगे तक होने वाले विकास के सारे क्रम को प्रभावित करता है। माता-पिता की बच्चे के प्रति होने वाली अभिवृति पर भी लिंग का प्रभाव पड़ता है जिस कारण बच्चे एवं बच्चियों में अंतर किया जाता है। लड़कियों की अपेक्षाकृत लड़कों को अधिक प्यार, दुलार, स्वतंत्रता दी जाती है। परिणामस्वरूप किसी न किसी स्तर पर लड़की के व्यक्तित्व का विकास प्रभावित होता है

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

4) पोषण :- भोजन का प्रकार भी बच्चे के शारीरिक एवं मानसिक विकास को प्रभावित करते है। कहा भी गया है - "एक स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है।" बच्चे के समुचित विकास के लिए पौष्टिक भोजन अनिवार्य है।

5) शुद्ध पर्यावरण :- शुद्ध जल, वायु एवं सूर्य का प्रकाश बच्चे के विकास के लिए आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है क्योंकि इसमें जीवन तत्व एवं पोषण तत्व पाये जाते है जो उन्हे रोगो से दूर करने की शक्ति प्रदान करते है।

6) अन्तः स्त्रावी ग्रान्थियाँ :- आंतरिक ग्रन्थियों की क्रियाएँ भी बच्चों के वृद्धि एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। जैसे - थाइराइड, पैराथाइराइड, पीयूष, थाइमस, एड्रीनल आदि ग्रंथियाँ।

7) परिवार की सामाजिक - आर्थिक स्थिति :- परिवार की सामाजिक आर्थिक स्थिति बच्चे के विकास स्तर को निरंतर प्रभावित करती है।

• वृद्धि एवं विकास : अंतर्सम्बंधों की समझ, अध्ययन के तरीके

व्यक्ति की वृद्धि और विकास की प्रक्रिया का अध्ययन शिक्षा मनोविज्ञान का एक महत्वपूर्ण विषय है। क्योंकि वृद्धि और विकास को जाने बिना एक अध्यापक विद्यार्थियों की सहायता नहो कर सकता और न ही अपनी शिक्षण व्यवस्था को व्यवस्थित ही कर सकता

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

है। अतः वृद्धि व विकास के विभिन्न पहलुओं पर विचार करना जरूरी है।

वृद्धि का अर्थ :- वृद्धि का अर्थ सामान्य तौर पर मानव के शरीर के विभिन्न अंगों के विकास और अंगों की कार्य करने की क्षमता माना जाता है। अंगों के इस विकास के परिणाम-स्वरूप उसका व्यवहार भी किसी न किसी रूप से प्रभावित होता है। इस प्रकार वृद्धि का अर्थ है - शरीर की वृद्धि।

विकास का अर्थ :- विकास का सामान्य अर्थ मानोसक विकास से है। विकास परिपक्वता की एक प्रक्रिया है, वास्तव में विकास शब्द का प्रयोग सभी प्रकार के परिवर्तनों के लिए प्रयुक्त होता है, जिससे कार्य कुशलता और व्यवहार में प्रगति हो।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि वृद्धि की अपेक्षा विकास की संकल्पना व्यापक है। यानि विकास के अर्थ में वृद्धि शामिल हो जाती है। अगर वृद्धि मात्रात्मक परिवर्तनों की ओर इशारा करती है, तो विकास गणात्मक परिवर्तन की ओर। सामान्यतः वृद्धि और विकास की प्रक्रिया साथ-साथ चलती है।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner